अध्याय –प्रथम

प्रस्तावना

1.0 भूमिका

1.1 समस्या की पूर्व भूमिका

1.2 समस्या का प्राकथन

1.3 अध्ययन की आवश्यकता

1.4 अध्ययन के उददे्श्य

1.5 परिकल्पनाएँ

1.6 परिचालक परिभाषाएँ

1.7 अध्ययन का सीमांकन

अध्याय – प्रथम

प्रस्तावना

1.0 भूमिकाः–

''बच्चों पर बोझ के संदर्भ में स्कूली बैग के बोझ के बारे में पालको,शिक्षाविदों तथा संचार माध्यमों में काफी चर्चाएँ होती रही है। लेकिन में स्कूली बैग की अपेक्षा विषयवस्तु को ना समझ पाना अधिक सोचनिय है। इस विषयवस्तु को न समझ पाने के परिणाम स्वरूप बच्चे पर ज्यादा घातक बोझ पड़ता है। वस्तुतः सरकारी और नगरपालिका स्कूलों में पढ़ने वाले अनेक बच्चों पर पाठ्यपुस्तकों का भार तो अधिक नहीं होता लेकिन न समझ पाने का बोझ भी समान रूप से अन्यायपूर्ण है।

इस संदर्भ में प्रो.यशपाल कहते है – वस्तुतः हमें यह बताया गया है कि पढ़ाई पूरी किये बिना स्कूल छोड़ देने वाले बच्चों में से अधिकांश बच्चे न समझ पाने के बोझ के कारण ही स्कूल छोड़ने को विवश होते हैं। क्षमता की दृष्टि से यह बच्चे उन बच्चों से श्रेष्ठ होते हैं जो आत्मसात किये बिना पर्याप्त विषयवस्तु को केवल याद कर लेते हैं तथा परीक्षा में अच्छा कर लेते हैं। व्यक्तिगत रूप से मेरा यह विश्वास है कि बिना समझे ''अधिक सीखने'' की अपेक्षा समझ कर ''थोड़ा सीखना'' ही ज्यादा बेहतर है।''[1]

मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गठित राष्ट्रीय सलाहकार समिति की रिपोर्ट ''शिक्षा बिना बोझ के'' में कहा गया है कि–बच्चों पर बोझ स्कूल बैग का नहीं परन्तु शिक्षकों द्वारा पढ़ाई जानेवाली उन किताबी बातों का है जो उनकी समझ में नहीं आती है। बच्चों पर बोझ 'सीखने' का है और 'न समझ पाने का' है क्योंकि यह बच्चे वो है जो अपनी प्रकृति

प्रदत्त अधिगम शैली से सीखते हैं, परीक्षा में श्रेष्ठ कर लेने का 'रटा–रटाया' तरीका उनकी समझ से परे है।

यह बच्चे अनुभव के द्वारा, क्रिया से, स्वयं करके और आत्मसात् करके सीखना चाहते हैं। रिपोर्ट की सिफारिशे साफ इसकी और इंगित करती है कि बच्चों को बोझ मुक्त शिक्षा देना अर्थात् बच्चों के अनुभवों के साथ शिक्षा को जोड़कर सरल बनाना।

छात्रों पर शैक्षिक बोझ तथा अधिगम के असंतोषजनक स्तर संबंधी चिंता–हमारे देश में पिछले दो दशको के दौरान बार–बार मुखर होती रही है। शिक्षा की समस्याओं के संबंध में गठित राष्ट्रीय सलाहकार समिति ने 'अधिगम की गुणवत्ता' में सुधार लाने के उपायो के बारे में सलाह दी है। समिति ने अधिगम को विशेष महत्व दिया है न कि पाठ्यक्रम को।

समिति की इसी बात को ''दिवास्वप्न'' में गिजुभाई ने बहुत पहले कहा है। गिजुभाई ने ग्राम्य क्षेत्र की उस शाला के विद्यार्थियों के पास से अच्छा परिणाम प्राप्त किया जिस शाला में जाना तथा उस शाला के विद्यार्थियों को पढ़ाना अन्य शिक्षक मुश्किल मानते थे। गिजुभाई ने धैर्य पूर्वक उन बच्चों को समझा, उनकी रूचि को समझा तथा इस बात को भी अच्छी तरह समझ लिया कि यह बच्चे पाठ्यपुस्तकों से दूर भाग रहे हैं, स्कूल में आना उन्हें पसंद नहीं परन्तु मजबूरीवश आ रहे हैं।

उनके पीछे कारण थे अध्यापकों की पढ़ाई की शैली तथा बच्चों की सीखने की शैली में अंतर गिजुभाई ने इन्हीं बातों को समझकर बच्चों को कहानी, खेल–कूद आदि के द्वारा शिक्षा के औपचारिक बोझ से मुक्त किया, और उसके बाद बच्चों के अनुभवों के साथ शिक्षा को (पाठ्यपुस्तक के

विभिन्न मुद्दो को) जोड़कर उन्हें पढ़ाया और जो परिणाम मिले वह शिक्षा जगत में मिसाल कायम कर गये।

गिजुभाई ने बच्चों की अधिगम शैली को अर्थात् उनकी सीखने की पद्धति या कला को जानकर उनको चित्रकला, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, गणित, भाषा आदि सभी विषय सीखाये थे। इसकी विशेषता यह थी कि उन्होनें इन सभी विषयों को एक साथ जोड़कर एक धागे में पिरोकर, एक दूसरे के संदर्भ द्वारा बच्चों को स्वयं सीखने के लिये प्रेरित किया था, किन्तु वर्तमान समय में शिक्षक इन सब बातों को समझ नहीं पा रहे हैं तथा अपने व्यवसाय में नहीं ला पा रहे हैं।

इस संदर्भ में ''शिक्षा बिना बोझ के''रिपोर्ट में कहा गया है कि ''अधिक पढ़ाई कराई जाती है, परन्तु बच्चे बहुत थोड़ा सीखते या समझते है। स्कूल बैग और पाठ्यपुस्तकों का बोझ तो समस्या का एक पहलू है, दूसरा पहलू बच्चों की रोज की दिनचर्या में देखा जा सकता है। शिक्षक प्रायः यह शिकायत करते हैं कि उनके पास इतना समय नहीं है कि वे कक्षा में ही किसी विषय को विस्तार से समझा सके या कार्यकलापों को आयोजित कर सके।''

सामान्यतः कक्षा में पाठ्यक्रम को पूरा करने का ढंग यह होता है कि शिक्षक निर्धारित पाठ्यपुस्तक को जोर से बोलकर पढ़ देते हैं और बीच-बीच में ब्लैक बोर्ड पर महत्वपूर्ण बिन्दुओं को लिख लिया करते हैं। अच्छे-अच्छे स्कूलों में भी बच्चों को प्रयोग करने, भ्रमण करने या किसी प्रकार का निरीक्षण करने का शायद ही कभी अवसर मिलता हो। विशेषकर ग्रामीण

क्षेत्रों के स्कूलों में तो कई मामलों में उपर्युक्त प्रकार का शिक्षण भी नहीं होता है।

गिजुभाई ने दिवास्वप्न में अन्य शिक्षको की तराह विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों के बोझ तले दबाके नहीं रखा। वह पढ़ाई कम करवाते थे। और सीखाते ज्यादा थे। उन्होनें बच्चों की रोज की दिनचर्या तय की थी। जो बच्चों की रोज की दैनिक प्रक्रियाएँ थी। परन्तु उसमें नयापन यह था कि उसके लिये गिजुभाई उनको क्षेत्र और समय दोनों प्रदान करते थे जो वर्तमान शिक्षक करने में अपने को असमर्थ मानता है।

गिजुभाई ने पाठ्यक्रम को पूरा करना अपना उद्देश्य नहीं माना बल्कि बच्चों को कितना ग्रहण, अधिगम करवा सकते है वह एनके लिये महत्वपूर्ण था। उन्होनें बच्चों को वर्गखण्ड से बाहर गांवों में, खेतों में नदी किनारे, पहाड़ों पर भ्रमण करवाके, नित्य नवीन प्रयोग करवाके, तथा निरीक्षण की आँख और दृष्टि देकर सीखाया है।

वर्तमान परीक्षण प्रणाली के विषय में शिक्षा बिना बोझ का कहना है कि शिक्षा को मुख्यतः परीक्षाओं की तैयारी की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करने के लिये विद्यार्थियों का प्रतिदिन उपदेश दिया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा के संदर्भ में अन्य किसी प्रेरणा अथवा प्रयोजन की वैधता नहीं बची है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कक्षा–10वीं एवं कक्षा–12वीं की सफलता को लेकर उठ रहे सवालों में कही ना कहीं यही कोई घटक जिम्मेदार हो सकते हैं। यही बात गिजुभाई 1931 में कह गये है उन्हों परीक्षा को नगण्य माना है। उनके विचार से बच्चों को परीक्षा को प्रतिदिन की क्रिया का एक हिस्सा मानने के लिये प्रेरित करना चाहिए। क्योंकि– ''वह विद्यार्थी विद्यालय के लायक नहीं है, ऐसा नहीं है परन्तु विद्यालय उनके

लायक नहीं है। जिस कार्य के लायक वो है वह कार्य एवं क्षेत्र शाला उसको नहीं देती है।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली का दोष यह है कि परीक्षा के द्वारा संकल्पनाओं तथा सूचनाओं के अपरिचित व नयी समस्याओं में प्रयुक्त करने की क्षमता या सामान्य रूप से सोचने की क्षमता की जाँच नहीं होती अपितु केवल रटने की क्षमता की जाँच ही हो पाती है।

कक्षा–10वीं तथा 12वीं के पश्चात् ली जाने वाली सार्वजनिक परीक्षाएँ ऐसी घटनाएँ बन गई है जिनका अपना एक विशिष्ट चरित्र तथा संस्कृति होती है।

परीक्षा के द्वारा जिस प्रकार का भय उत्पन्न होता है तथा परीक्षा के लिए जिस प्रकार की तैयारी की आवश्यकता है वे सब सामाजिक जनश्रुति में इतने स्थापित हो चुके है कि प्रश्न–पत्र शैली में मामूली सुधारों से शिक्षण अधिगम में कोई अंतर नहीं आयेगा।

समिति की इस सिफारिश से यह बात स्पष्ट हो रही है कि बालकों की अधिगम शैली को जानकर उसके अनुसार शिक्षा दी जाये, जिसमें, अनुभव, क्रिया, प्रयोग आदि का समन्वय किया जाये तो शिक्षण अधिगम में सफलता मिल सकना संभव है।

शिक्षा प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य बालक के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना है। जिससे उसका सर्वांगीण विकास हो सके। अनुसंधान प्रक्रिया का पहला चरण अन्वेषण के लिये उपयुक्त सूस्या को चुनना है। अनुसंधान कठिनाई अनुभव होने पर ही आरंभ होता है। जब भी कोई कठिनाइ उत्तपन्न होती है और उसके निवारण की आवश्यकता होती हे तो अनूसंधान किया जाता हैं

सीखने की प्रकिया मानव के मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार के संशोधन की प्रकिया है। मानव अपने को वातावरण के अनुकूल बनाते हुए अनुभवों से अधिक लाभ उठाने का प्रयत्न करता हैं–इस प्रकिया को सीखना कहते है। वासतव में मनुष्य अपना व्यवहार संशोधित करता रहजता है तथा उसको अपनाता हे।

शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान स्थिति में अनेक समस्याए सामने आ रही है। शिक्षा की सबसे बड़ी ओर सार्वत्रिक समस्या हे गुणवत्ता का अभाव एवं सफलता का कम प्रमाण। परंन्तु कईबार पाया गया हैकि गुणवत्तायुक्त शिक्षा एवं आवश्यक सामग्री की पूर्ति के बाद भी सुलता की मात्रा में या उच्च परिणाम प्राप्त करने में शिक्षा संस्थाए तथा विद्यार्थी असुल हो जाते ह।

प्रत्येक व्यक्ति एवं विद्यार्थी की सीखने की अपनी अधिगमशैली होती हैं बुद्धिआंक एवं ग्रहणशक्ति सामान्य से उपर होने के बाद भी विद्यार्थी स्पनध्यात्मक परीक्षाओं में असुल हो जाते ।अपने ध्येय को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इसका प्रमुख कारण हमारी शिक्षा प्रकिया है। वर्गखंडो में किसी एक ही शैली से पढ़ाया जाता हैं।

विद्यार्थी की अधिगमशैली को जाने बिना उनको परम्परागत शैली से पढ़ाया जाता है। छात्रों की उस शैली को अधिक महत्व देकर एक एसी शिक्षा प्रणाली तैयार की लाये जिसमें छात्रों को शिक्षा उनकी अधिगमशैली के आधार पर दी जाये। इस समस्या में भिन्न भिन्न परिकल्पनाए लेकर छात्रों की अधिगमशैली को ज्ञात करना तथा उनकी उपलब्धियों पर पड़नेवाले प्रभाव तथा संबंध को जानने के उद्धेश्य से इस समस्या का चयन किया गया है।

1.1 समस्या की पूर्व भूमिका :–

सामान्यरूप से बालक अनुभव निरीक्षण सोचकर और प्रायोगिक इन चारों प्रकार से सीखता है। कोई भी चीज सीखाते समय शिक्षककी अपनी एकमात्र परंरामगत पद्धति होती है। लेकिन बालक भिन्न–भिन्न शैलियों से सीखता है। जैसे कि भाषाविज्ञान में बालक को उच्चारण अवयवों के बारे में सीखाया जाता है तब कुछ बालक अनुभव से कुछ निरीक्षण से तो अन्य प्रायोगिक रूप से उसका उच्चारण करके अधिक अच्छी तरह से सीख सकता है।

अनुसंधान अध्ययन के लिये इसी विषय को चुनने के पीछे वैचारिक भूमिका वर्तमान समय में विद्यार्थियों को हो रही सीखने संबंधी समस्यायें और उपलब्धियों पर होनेवाले प्रभाव को निराकरण लाना है। इस पद्धति से बालक को शिक्षा देने से वह सरलता से अध्ययन कर पायेगा। यह पद्धति बालक को सीखाने में अधिक मदद रूप हो सकती है।

1.2 समस्या का प्राकथन :–

वर्तमान शिक्षा पद्धति में विद्यार्थियों को सिखाने के लिये भिन्न–भिन्न प्रयुक्तियों का उपयोग किया जाता है। किन्तु उनकी सीखने की पद्धति या अधिगम शैली को जाने बिना उपलब्धि या सफलता को बढ़ाना मुश्किल है। व्यक्तिगत रूप से अधिगम शैली को महत्व दिया जाये तो इस समस्या का हल मिल सकता है।

अधिगम की शैली मनुष्य को जन्मजात प्राप्त है। अधिगम की प्रकृति पर निर्भर है। मनुष्य जीवन में जो भी कुछ सीखता है उसके मूल में अनेक तत्व अधिगम शैली का निर्माण करते है। महात्मा गांधीजी ने अपने शैक्षिक विचारों में इसी बात को साररूप बताते हुए कहा है कि " बालक के भीतर

जो कुछ अच्छा है उसको पहचानकर उस प्रतिभा को बाहर लाना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिये।

वर्तमान शिक्षा में सफलता के कम प्रमाण से कुछ प्रश्न उभरकर सामने आये है। उपलब्धि में अधिगम शैली का क्या महत्व हैं? अधिगम शैली का उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है? बालक की अधिगम शैली को जानना आवश्यक है क्या? सफलता-असफलता के लिये अधिगम शैली जिम्मेदार है क्या? उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिये तथा उनके यथायोग्य सुझाव देने के लिये अधिगम शैली तथा उपलब्धि के संबंध को जानने की कोशिश इस अनुसंधान में की गई है।

यहॉ पर अधिगम शैली से तात्पर्य-बालक की वह मूल प्रवृत्ति जिसके द्वारा वह सीखने की प्रक्रिया में अधिक सफलता महसूस करता है, तथा जो मूल अधिगम प्रकृति से है। उपलब्धि शब्द केवल कक्षा-7 के वार्षिक परीक्षण में सभी विषयों में प्राप्त अंको से है। यहॉ पर उपलब्धि शब्द केवल वैधिक और अभ्यास क्रम संबंधी परीक्षणों में मिली सफलता का ही निर्देश करता है।

अधिगम शैली तथा उपलब्धि इस अनुसंधान के दो प्रमुख चर है। यह दोनों ही आपस में संबंधित चर है। किसी एक की अनुपस्थिति अनुसंधान को भ्रामक बना सकती है।

1.3 अध्ययन की आवश्यकता :-

अधिगम शैली विषय पर वैसे तो अनेक अध्ययन हुये है, जिसमें अधिगम शैली क्या है? अधिगम शैली का विकास कैसे होता हैं? मानव और मानवेतर सीखने की प्रवृत्ति कैसे विकसित करते है? आदि भिन्न-भिन्न प्रश्नों को नजर में रखकर विद्वानों के द्वारा इस रोचक विषय पर कार्य किया है। डेविड हन्ट और डेविड कोल्ब इसके लिये विशेष प्रसिद्ध

है। परन्तु बहुत कम देखा गया है कि शिक्षा में अधिगम शैली को महत्व दिया गया हो। ऐसा भी नहीं है कि शिक्षा विशेषज्ञों ने अधिगम शैली को शिक्षा के साथ नहीं जोड़ा है, परन्तु हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली कुछ इस प्रकार आगे गतिमान है कि उनका ध्यान केवल उपलब्धि पर है, अतः अधिगम शैली को अधिक महत्व नहीं दिया गया है।

अधिगम शैली को अधिक महत्व दिये बिना उपलब्धि का प्रमाण बढ़ाना मुश्किल है। इस बात को सिद्ध करने के लिये क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अधिगम शैली को ज्ञात करके शिक्षा देने से उपलब्धि का प्रमाण बढ़ाया जा सकता है? यह विषय चुना गया है। कक्षा–8 किसी भी उच्च शिक्षा की नींव है। अतः वही से बालक की अधिगम शैली को ज्ञात करके शिक्षा देने से उपलब्धि का प्रमाण बढ़ाया जा सकता हैं, इसलिए इस विषय पर अध्ययन करना आवश्यक है।

माध्यमिक स्तर पर छात्रों के परिणामों में सुधार एवं उपलब्धि का प्रमाण बढ़ाने के लिये अधिगम शैली पर कार्य करना आवश्यक है। शिक्षा प्रणाली को और उपयुक्त बनाने के लिये अन्य क्षेत्रों की भाँति अधिगम शैली के विशाल क्षेत्र में भी अध्ययन करना आवश्यक है। जिससे उपयोगी और विश्वसनीय ज्ञान प्राप्त हो सके।

1.4 अध्ययन के उद्देश्य –

1. कक्षा–8वीं के विद्यार्थियों की अधिगम शैली को ज्ञात करना।
2. कक्षा–8वीं के शहरी विद्यार्थियों की अधिगमशैली एवं उपलब्धि के बीच संबंध ज्ञात करना।
3. कक्षा–8वीं के ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि और उपलब्धि के बीच संबंध को ज्ञात करना।

1.5 परिकल्पनाएँ –

1. "कक्षा–8वीं के शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि के बीच सार्थक संबंध नहीं है।"
2. "कक्षा–8वीं के ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि के बीच सार्थक संबंध नहीं है।"
3. "कक्षा–8वीं के विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि के बीच सार्थक संबंध नहीं है।"

1.6 परिचालक परिभाषाएँ :–

(अ) अधिगम :–

शब्दकोष के अनुसार अधिगम शब्द का सबसे सटीक पर्यायवाची शब्द 'सीखना' दिया गया है। अन्य अर्थ ज्ञान, विध्या, जानकारी आदि है।

अंग्रेजी अर्थ :– अधिगम शब्द के लिये अंग्रेजी में Learning शब्द अधिक अर्थबोधक है। **जेरोम ब्रुनर** ने अधिगम ने अनेक प्रकार बताये है, जिनमें उपयुक्त का चुनाव करना होता है। हिल के अनुसार–अधिगम की क्रिया छात्रों को अभिप्रेरित करके अधिक प्रभावशाली बनाई जा सकती है।

(ब) शैली :–

शैली शब्द का शब्दकोषीय अर्थ है– ढंग, तरीका, या पद्धति। इस अध्ययन में शैली के पर्यायवाची शब्द में पद्धति सबसे सटीक शब्द है।

अंग्रेजी अर्थ :– शैली शब्द के लिये अंग्रेजी में Styel शब्द अधिक अर्थबोधक है।

(क) उपलब्धिः–

फ़ादर कामिल बुल्के ने अपने शब्दकोष में उपलब्धि शब्द को विभिन्न क्षेत्रों के साथ जोड़ा है। उपलब्धि शब्द के पर्यायवाची शब्द में कार्य संपादन, निष्पादन, कार्यसिद्धि, सफलता आदि है। इस अनुसंधान का क्षेत्र शिक्षा है। अतः यहाँ उपलब्धि शब्द का बोध मूल्यांकन परीक्षणों में प्राप्त अंकीय सफलताओं से है।

अंग्रेंजी अर्थ :– उपलब्धि शब्द के लिये अंग्रेजी में Achievement शब्द है।

1.7 समस्या का सीमांकन :–

- प्रस्तुत शोधकार्य गुजरात राज्य के भावनगर जिले के पालिताना तालुका क्षेत्र तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोधकार्य कक्षा–8वीं के विद्यार्थियों पर किया गया है।
- शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के कुल दो विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों पर किया गया है।

प्रस्तुत शोधकार्य 13 से 14 साल उम्र के बच्चों पर किया गया है।